कोविड 19 पर एआईएसीए -क्राफ्ट मार्क सदस्यों के साथ गुणात्मक सर्वेक्षण

अखिल भारतीय कारीगरों और शिल्पकार कल्याण संघ द्वारा

aiaca
All India Artisans and Craftworkers Welfare Association

विषय सामग्री:

1. पृष्ठभूमि.....02
2. भाग ए: कारीगरों की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया.....06
3. भाग बी: क्राफ्ट एंटरप्राइजेज / ऑर्गेनाइजेशन की प्रतिक्रिया.....09
4. सरकार से पूछे जाने वाले मुख्य बिन्दु.....12
5. एआईएसीए की सिफारिशें 13

पृष्ठभूमि

ऐसा लगता है कि हाल के वर्षों में सामाजिक / आर्थिक और राजनीतिक बदलाव को वैश्विक क्रम में बदलाव के चक्र में देखा गया है; जिन्होंने हमारे व्यक्तिगत / सामूहिक भावना को गड़बड़ा दिया है। कुछ लोग कहेंगे कि हम बदलाव के दौर में हैं - जिसके लिए ना तो हम बहुत पुराने हैं, ना ही बहुत अधिक परिचित तरीके से व्यवस्थित हैं, और ना ही अपने लिए एक नए नैतिक / दार्शनिक प्रतिमान को पूरी तरह गहराई से नापने में सक्षम हैं। कुछ लोग कहेंगे कि भारत जैसे देश में, ऐतिहासिक संदर्भ इस अस्तित्वगत समस्या को और अधिक जटिल बना देता है। हमारा देश कई भाषाओं, कई पहचानों, कई विसंगतियों से भरा देश हैं, जो सभी राष्ट्रवाद की आंतरिक धारणा में बंधे हुए हैं। वैश्वीकरण का मतलब ऐसी दुनिया से है जो सीमारहित हो, इसलिए अचानक इसके कारण हमारे देश को जानने वाले केवल इस देश के ही नागरिक नहीं हैं। मुख्य सवाल हमेशा यह रहा है कि इन सभी परिवर्तनों में, हम स्वयं को सबसे अधिक हाशिए पर कहां पाते हैं ? इस उभरती हुई विश्व व्यवस्था में संसाधनों, सूचनाओं तक पहुंच और नियंत्रण के मामले में उनके लिए क्या काफी बदलाव आया है? यदि यह बदलाव कुछ भी हो, तो क्या हम एक अधिक असमान समाज, एक अधिक असमान विश्व व्यवस्था बन गए हैं? ये सवाल दुनिया भर में फैली कोविड महामारी को ध्यान में रखते हुए विशेष महत्व रखती हैं। यह प्रभाव वैश्विक समुदाय के सभी वर्गों में व्यापक रूप से फैला हुआ है; यह स्वास्थ्य आपातकाल कुछ हद तक सबसे सच्चे अर्थों में, इसके समान है कि इसने संसाधनो को कैसे प्रभावित किया है और कितने संसाधनो को खराब किया है । इस दस्तावेज़ द्वारा भारत में शिल्प क्षेत्र में कोविड 19 द्वारा पड़ने वाले सबसे बड़े प्रभाव को ध्यान में रखते हुए उन छोटे, व्यक्तिगत कारीगरों और शिल्पकारों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिनकी आवाज़ शायद ही कभी सार्वजनिक चर्चाओं तक पहुँचती है।

दरअसल छोटे कारीगरों और शिल्प समूहों में, एंटरप्राइज का लाभ उठाने के लिए ज्ञान, कौशल, संपत्ति और संसाधनों की कमी है, इसलिए संक्षेप में कहें तो यह व्यवसाय की वह अवधारणा है जो लाभ कमाने के लिए सामाजिक वस्तुओं को समान प्राथमिकता के रूप में सबको अवसर देती है और एक 'निष्पक्ष अर्थव्यवस्था' लाना चाहती है । महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या शिल्प कौशल केवल एक जीवन निर्वाह करने / अस्तित्व बनाए रखने की रणनीति है या एक संपत्ति निर्माण की रणनीति भी बन सकती है जो नए उद्यमशीलता प्रयासों को जन्म दे सकती है। कई ग्रामीण कारीगरों द्वारा, शिल्पकारी को एक पूरक व्यवसाय के रूप में फिर से अपनाया गया है, जिसमें कृषि और कृषि आधारित कार्यों को घरेलू आय का बड़ा हिस्सा माना जाता है। अन्य रोजगार लाभों की अनुपस्थिति में, मिलने वाले मौसमी कार्यों को इन शर्तों पर आगे बढ़ाया जाता है, जो कि मिलने वाले पीस रेट काम के साथ अस्तित्व में आ सकती है। डेवलपमेंट कमिश्नर की हैंडीक्राफ्ट (हैंडीक्राफ्ट) वेबसाइट के आंकड़ों से पुष्टि होती है कि देश के सभी शिल्पकार 80% से अधिक सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि से हैं (अनुसूची जाति: 20.8%, अनुसूची जनजाति: 7.5% और अन्य पिछड़ी जातियां: 52.4%)। कोविड- 19 के फैलने के समय में पहुंच और आउटरीच के प्रश्न सामाजिक-आर्थिक हाशिए के इन आयामों की तुलना में महत्वपूर्ण महत्व रखते हैं।

अखिल भारतीय कारीगर और शिल्पकार कल्याण संघ(AIACA) हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र में एक सदस्यता-आधारित संगठन है। एआईएसीए एक शीर्ष निकाय है जो 2004 के बाद से शिल्प क्षेत्र के लिए बाजार द्वारा नेतृत्व करने वाले विकास को बढ़ावा देने के लिए कई मुद्दों पर काम कर रहा है; और आय में वृद्धि और शिल्प उत्पादकों के जीवन स्तर में सुधार ला रहा है ।पिछले एक दशक में, एआईएसीए ने शिल्प उत्पादकों के लिए ऋण तक पहुंच और क्षेत्र के लिए पर्यावरण और स्वास्थ्य और सुरक्षा मानकों सहित कई मुद्दों पर नीतिगत शोध और वकालत की है; इसने एक क्राफ्ट्स-सर्टिफिकेशन प्रणाली विकसित की जिसे क्राफ्टमार्क कहा जाता है; इसने वाणिज्यिक व्यापार सूची, व्यापार मेलों और ऑर्डरों की पूर्ति के माध्यम से सदस्य निर्माता समूहों और उद्यमों की बिक्री और आउटरीच; और उत्पाद डिजाइन और व्यवसाय विकास सेवाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से बैक-एंड उत्पादन प्रणालियों को विकसित करने और मजबूत करने में सहायता की। हम भारत के 23 राज्यों में 100,000 से अधिक कारीगरों के साथ काम करते हैं। इस सर्वेक्षण के माध्यम से, अलग-अलग कारीगरों, शिल्प आधारित एसएचजी और कारीगरों का सामूहिक, एकमात्र स्वामित्व और डिजाइनर के नेतृत्व वाले संगठनों, बड़ी कंपनियों, डिजाइनर के स्वामित्व वाली फर्मों के स्पेक्ट्रम के पार हम अपने मौजूदा सदस्यों में से 30 सदस्यों से सैंपल ले चुके हैं।

सर्वेक्षण	श्रेणियाँ	प्रश्न पूछे गए
प्रथम भाग	व्यक्तिगत कारीगर	• कोविड-19 महामारी के बारे में आप क्या जानते हैं? • आपको यह जानकारी कहां से मिली है? • क्या डीसीएच कार्यालय / कारीगरों और बुनकरों को भेजे गए दिशा-निर्देशों द्वारा कोई जानकारी प्रदान की गई है? •कोविड -19 के प्रकोप के कारण आपको कौन सी चुनौतियाँ का सामना करना पड़ रहा हैं? • आप इन चुनौतियों का सामना कैसे कर रहे हैं? • आपको किस तत्काल सहायता की आवश्यकता है? • सूचना / संसाधन (धन सम्बन्धी या कुछ और)। • संकट से बचने के लिए आपको किन दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता होगी? • ऐसी कौन सी 3 प्रमुख चीजें क्या हैं जो आपको सरकार से चाहिए?
द्वितीय भाग	ब्रांड्स कंपनियां	• क्या कार्यरत कर्मचारियों के पास ईपीसीएच / श्रम मंत्रालय / अन्य संबंधित मंत्रालयों से कोई दिशानिर्देश भेजा गया है? • व्यवसाय में कोविड -19 के प्रकोप के कारण आपके सामने कौन सी चुनौतियाँ हैं? • आप इन चुनौतियों का सामना कैसे कर रहे हैं? • आपको किस तत्काल सहायता की आवश्यकता है? सूचना / संसाधन (धन सम्बन्धी या कुछ और)। • संकट से बचने के लिए आपको किन दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता होगी? • आपके 3 प्रमुख प्रश्न कौन से हैं जो आप सरकार से पूछना चाहते हैं?

राज्य	जिला	राज्य	जिला
पंजाब	चंडीगढ़, मोहाली	**मध्य प्रदेश**	इंदौर
उत्तराखंड	अल्मोड़ा, देहरादून	**ओडिशा**	भुवनेश्वर, पुरी
हरियाणा	पानीपत	**पश्चिम बंगाल**	कोलकाता
दिल्ली	नई दिल्ली	**नगालैंड**	कोहिमा
उत्तर प्रदेश	वाराणसी, आजमगढ़, मुरादाबाद	**महाराष्ट्र**	पुणे, पालघर, मुंबई
राजस्थान	कोटा, शाहपुरा, बाड़मेर, जयपुर	**कर्नाटक**	बीदर, चन्नापटना
गुजरात	कच्छ, छोटा उदेपुर, अहमदाबाद		

भाग ए: कारीगरों की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया

इस सर्वेक्षण के दौरान 15 अलग-अलग कारीगरों तक पहुंचा गया।

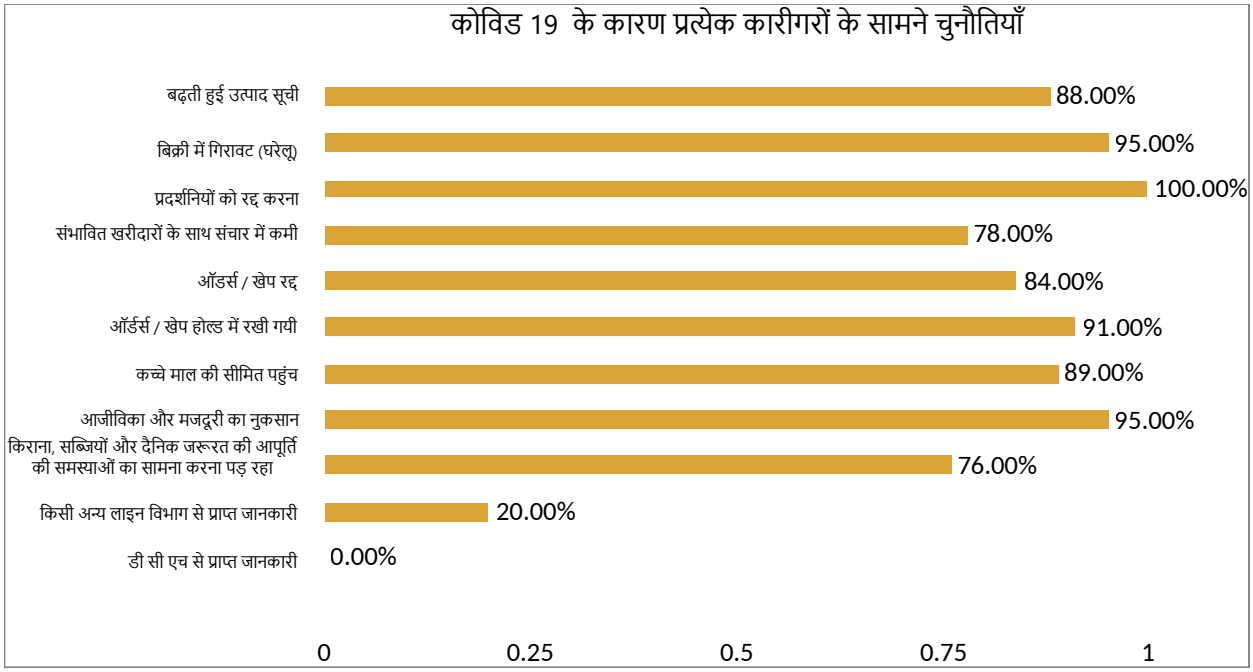

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

कोविड 19 की जानकारी के मुख्य स्रोत टीवी समाचार, समाचार पत्रों और सोशल मीडिया (जिनके पास पहुँच है उन लोगों के लिए) से हैं। कारीगरों को अधिक से अधिक सलाह प्राप्त करने की जरुरत पर जोर दिया जा रहा है, इसके अलावा कोविड 19 से सम्बंधित जो बुनियादी जानकारी प्रसारित की जा रही है - वे उसे अच्छी तरह से जानते हैं।

एआईएसीए ने अपने सदस्यों के साथ डब्ल्यूएचओ हेल्पलाइन नंबर साझा किया है, जिनका उपयोग व्हाट्सएप द्वारा किया जा रहा है जो नवीनतम नंबर, सुरक्षात्मक उपाय, अपवाहें फैलने को रोकने में, यात्रा सलाह, समाचार और प्रेस के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अन्य लोगों के साथ काम करते हैं। इसके लिए स्थानीय जानकारी और रेफरल सेवाओं को जानने की आवश्यकता है। हमारे सदस्यों द्वारा मिलने वाली प्रतिक्रियाओं से, हमने जाना है कि मिलने वाली प्रतिक्रियाऐं भिन्न है, पुलिस और जिला प्रशासन ने कुछ क्षेत्रों में कदम उठाए हैं - कच्छ, गुजरात में, पुलिस और स्वास्थ्य कर्मी कोविड से सम्बंधित, एहतियाती उपायों को घर-घर जाकर बता रहे हैं। जिला मजिस्ट्रेट को राजस्थान के कोटा में सक्रिय किया गया है और कैथून में पुलिस द्वारा नियमित घोषणा करके समाज को मदद दी जा रही है। राजस्थान के शाहपुरा में, आंगनवाड़ी के कर्मचारी आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक घर में जाकर जानकारी देते हैं और सामान्य दवाओं की आपूर्ति भी करते हैं। अल्मोड़ा, उत्तराखंड में हमारे सदस्य जिला उद्योग केंद्र, अल्मोड़ा के कार्यालय के माध्यम से सचिव (चिकित्सा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण और चिकित्सा शिक्षा) कार्यालय से आधिकारिक संचार (आदेश / सलाह) प्राप्त करते हैं । वाराणसी और मुबारकपुर दोनों स्थानों पर पुलिसकर्मियों की एक बड़ी मौजूदगी है, जो लोगों को दरवाजे से बाहर कदम रखने से रोकने के लिए जानकारी दे रहे हैं और बड़ी संख्या में उनके आस पास गश्त लगा रहे हैं।

सदस्य व्यापक तौर पर नियमित ऑडर्स के रद्द होने की रिपोर्ट कर रहे हैं; जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन ठप्प हो गया है। खरीदारों (भारत आर्ट एंड क्राफ्ट्स - चेन्नापटना) के साथ नियमित संचार में ब्रेकडाउन के कारण लदान भी रुक गया है; जिससे शिपमेंट ट्रांजिट (मुबारकपुर वीव्ज़) में भी फंस गए हैं। स्थापित खरीदारों की प्रतिबद्धताओं को भी आंशिक रूप से रद्द कर दिया गया है या (मुबारकपुर वीव्ज़ और जवाजा लेदर एसोसिएशन) उन्हें रोक लिया गया है जिससे यहाँ भय और अनिश्चितता पैदा हो गयी है। उत्पादन के कई केंद्रों (जीवीसीएस, बाड़मेर) के साथ बड़े संगठन आने वाले भविष्य में इनमें से कुछ केंद्रों को बंद करने का

अनुमान लगा रहे हैं। पर्यटन केंद्रों (पुरी, कुमाऊं और गढ़वाल) में कारीगरों ने फुटफॉल की भारी कमी देखी है और अब वे अभी तक मिले छोटे ऑर्डर्स को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। कारीगर बढ़ी हुई उत्पादन सूची की रिपोर्ट कर रहे हैं और कुछ अपनी उत्पादन योजना की समीक्षा कर रहे हैं ताकि निकट भविष्य में यह एक बोझ न बन जाए।

पिछले हफ्ते की तुलना में किराने का सामान और सब्जियों की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं, खासकर लॉक डाउन होने के बाद - विशेष रूप से कच्छ, इंदौर, कोटा, कोलकाता, वाराणसी, मुबारकपुर, बाड़मेर, पुरी और भुवनेश्वर में - लगभग सभी क्षेत्रों में यह तेजी दिखाई दे रही है ।यह उन कारीगरों के लिए पहले से ही समस्याएँ पैदा कर रहा है, जिन्हें आगे इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने क्षेत्रों में घोषित राहत उपायों की कोई जानकारी नहीं है। उनमें से अधिकांश ने साझा किया है कि उनके पास केवल सप्ताह भर जीवित रहने के लिए किराने का सामान है। उत्तर प्रदेश क्लस्टर में मास्टर बुनकर व्यक्तिगत रूप में प्रत्येक बुनकरों को राशन सहायता प्रदान कर रहे हैं, जो उनके साथ काम करते हैं। इंदौर और शाहपुरा (म. प्र. और राजस्थान) में, गैर-सरकारी संगठनों के सम्पर्क में आने वाले वंचितों को मुफ्त राशन की मदद देने की हमारे पास रिपोर्टें आई हैं।

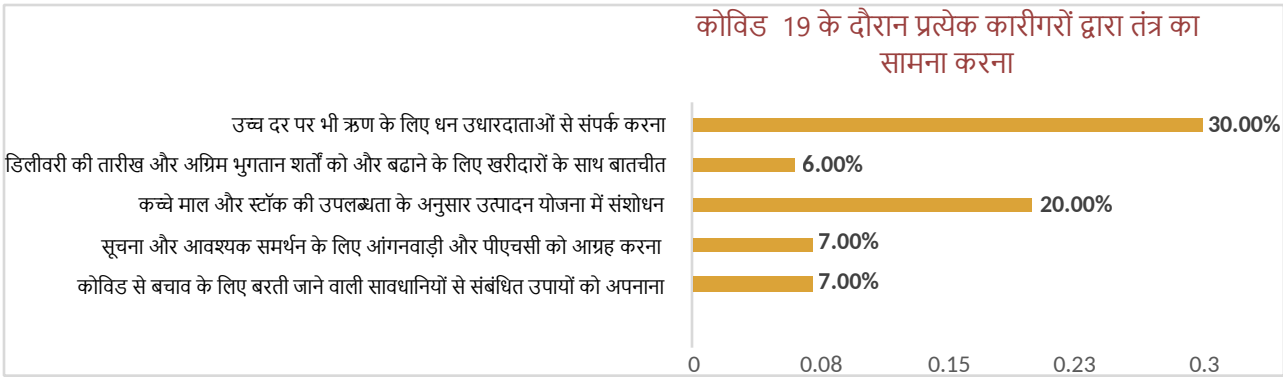

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

कुछ कारीगर ऐसे हैं जो लॉकडाउन को अपनी उत्पादन योजना पर दोबारा गौर करने के लिए उपयुक्त समय के रूप में देख रहे हैं। कच्छ में एक मास्टर कारीगर इस समय काला कपास से संबंधित अन्वेषण करने के लिए निवेश कर रहे है; वह कहते है कि वह रेशम और ऊन की तुलना में कपास में अधिक संसाधनों का आवंटन करेंगे, क्योंकि किसान इसे लंबी अवधि के लिए संग्रहीत कर सकते है। यह दूरदर्शिता संभवतः अपने वर्तमान व्यवसाय में कुछ हद तक वित्तीय सम्पन्ता की क्षमता के साथ आती है; विशेष रूप से जब कई अन्य लोगों की तुलना में जो अभी के लिए जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, और जिनके पास आने वाले भविष्य के लिए उत्पादन संबंधी कोई योजना नहीं है।

दिल्ली से बाहर के केवल 1 कारीगर ने वर्तमान परिस्थितियों में डिलीवरी के लिए समय सीमा बढ़ाने के लिए एक खरीदार के साथ अपनी बातचीत के बारे में बात की है। बाकी के लिए, या तो खरीदार / खरीदारों के साथ नियमित संचार बाधित होता दिख रहा है या आर्डर अपने आप स्वयं रद्द हो जा रहे हैं या रोक दिए जा रहे हैं। इससे समग्र मूल्य श्रृंखला में इन छोटे कारीगरों के साथ की जाने वाली न्यूनतम सौदेबाजी की शक्ति उभरती हुई दिख रही है।

कारीगरों के बीच स्पष्ट रूप आर्थिक बाधाओं के साथ, 1 / 3 उत्तरदाताओं ने नकद सहायता के लिए स्थानीय धन उधारदाताओं से संपर्क करने की आवश्यकता के बारे में बात की है, भले ही यह ब्याज की उच्च दर पर प्रदान किया गया हो। अन्य विकल्प के रूप में , कोटा में युवा महिला बुनकरों के एक समूह द्वारा एसएचजी बचत को उपयोग में लाने का तरीका अपनाया जा रहा है ।
कोविड 19 जैसे स्वास्थ्य आपातकाल के समय भी मुख्य मुद्दे आजीविका से संबंधित हैं। केवल 1 उत्तरदाता (हिमाद्री हंस) ने काम के स्थानों को साफ करने के लिए किए गए ठोस उपायों के बारे में बात की, कारीगरों को मुफ्त मास्क और सैनिटाइजर प्रदान किए, उन्हें वेतन के साथ छुट्टी प्रदान की और अपने सभी कर्मचारियों को घर से काम करने में सक्षम बनाया है।

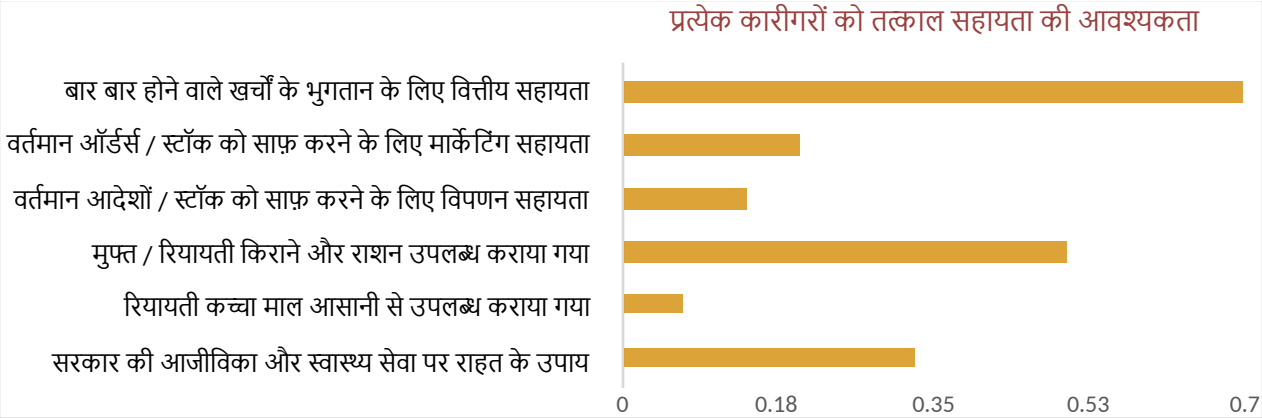

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

अगले 3 महीनों या इसके लिए कारीगरों, किराए, बिजली, पानी और गैस बिलों के लिए मजदूरी के भुगतान जैसे अलग-अलग खर्चों के लिए 70% उत्तरदाताओं द्वारा वित्तीय सहायता का तत्काल अनुरोध किया गया है। इसके बाद इन आवश्यक वस्तुओं पर लॉकडाउन के बाद देखी गई कीमतों में मुद्रास्फीति के जवाब में, 50% उत्तरदाताओं द्वारा मुफ्त / रियायती किराने का सामान / राशन देने के लिए अनुरोध किया गया है।

1/3 उत्तरदाताओं को अपने कारीगरों के लिए आजीविका और स्वास्थ्य सेवा से संबंधित सरकारी राहत उपायों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है। जैसा कि पहले खंड में देखा गया है,यह राज्य सरकारों द्वारा प्रदान की जा रही राहत सेवाओं पर विशिष्ट जिला स्तरीय जानकारी तक पहुंच के लिए स्थानीय सूचना के प्रसार की आवश्यकता को मान्यता देता है ।

कोविड 19 के एवज में जागरूकता पैदा करने / टेस्टिंग / फॉलो अप करने के लिए उचित चिकित्सा सुविधाओं / सहायता की कमी पर 20% उत्तरदाताओं द्वारा चिंता व्यक्त की जा रही है। उन्होंने स्पष्ट रूप से दूरदराज के स्थान वाले क्षेत्रों (मोबाइल वैन / क्लीनिकों के माध्यम से) में बेहतर पहुँच देने के लिए कहा है क्योंकि आसपास के मेट्रो शहरों की यात्रा करना इन परिस्थितियों में महंगा और कठिन है। यह एक प्रमुख क्षेत्र है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जो कि वर्तमान में ग्रामीण हॉटस्पॉट्स में फैले कोविड 19 से सम्बंधित पूर्वानुमान देती है।

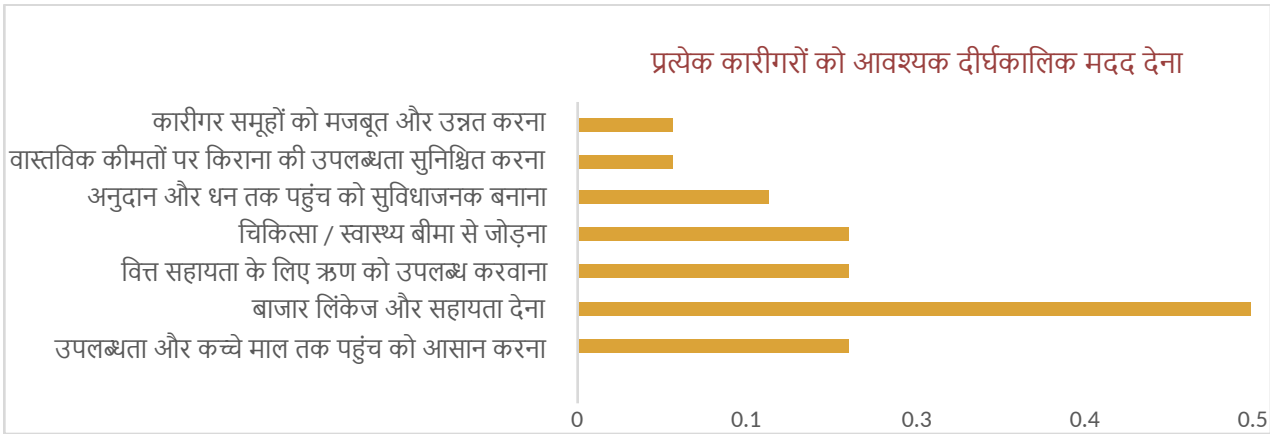

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

50% अलग-अलग कारीगरों ने विभिन्न माध्यमों से मार्केटिंग सहायता प्राप्त करने का उल्लेख तत्काल लंबी अवधि के उपाय के रूप में किया है: जैसे राज्य सरकारों द्वारा मौजूदा कारीगरों की सूची के अनुसार उनसे अन्य आवश्यक वस्तुओं की खरीद करना , डीसी हस्तशिल्पियों द्वारा प्राथमिकता के आधार पर छोटे कारीगरों को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय इवेंट्स के लिए स्थान और धन (कपड़ा मंत्रालय, ईपीसीएच के माध्यम से), सहायता (अयोग्य को नहीं) को उपलब्ध करना ।

20% उत्तरदाताओं द्वारा वर्तमान वित्तीय संकट से निपटने के लिए ऋण को टालने का उल्लेख किया गया है; जैसे विभिन्न रूप में कार्यशील पूंजीगत व्यय के लिए कम ब्याज दर के साथ लंबी अवधि के लिए लिया गया ऋण और कैश क्रेडिट ऋण।

20% उत्तरदाताओं का यह भी अनुमान है कि स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को इस महामारी के मद्देनजर लंबी अवधि में ध्यान रखने की आवश्यकता होगी; इसलिए वे इस समय के दौरान कारीगरों के लिए आसान बीमा और चिकित्सा बीमा को उपलब्द्ध करवाने की वकालत कर रहे हैं।

छोटी अवधि की आवश्यकताएं (किराने का सामान / राशन आदि) लंबी अवधि में ज्यादा अत्यधिक आवश्यकता नहीं रखती हैं; केवल 1 उत्तरदाता द्वारा चिंता व्यक्त की जा रही है कि निकट भविष्य में इन वस्तुओं की बढ़ती कीमतों को सरकारी हस्तक्षेप द्वारा स्थिर किया जाना चाहिए।

द्वितीय भाग : शिल्प उद्यमों / संगठनों की प्रतिक्रियाएँ

15 उद्यमों / संगठनों / कंपनियों से उत्तरदाताओं के रूप में संपर्क किया गया।

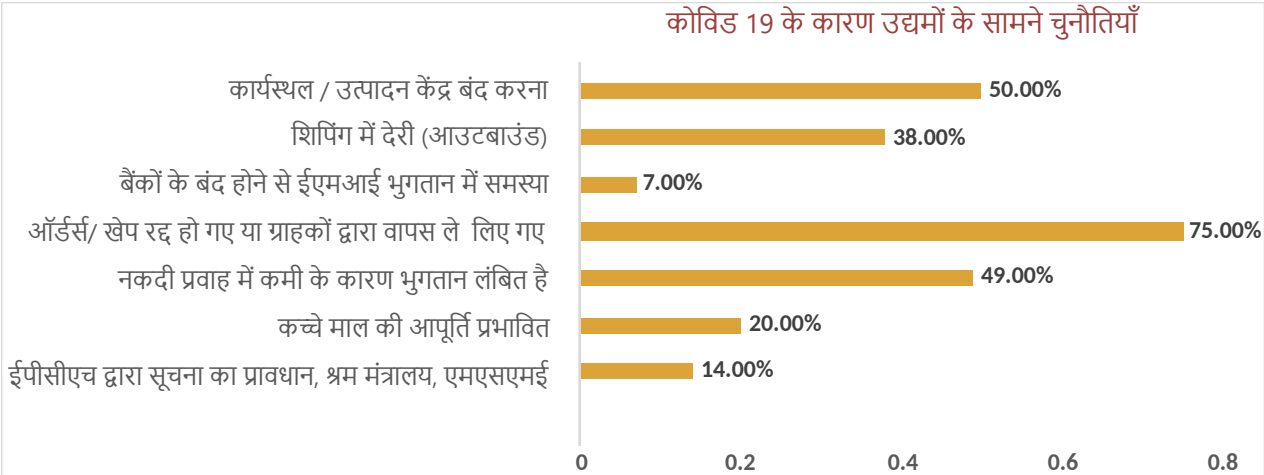

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

एम्प्लॉयड कर्मचारियों (हरियाणा) के दिशानिर्देशों के बारे में केवल 1 उद्यम को राज्य सरकार से जानकारी मिली है; दूसरे को ईपीसीएच से एक मेल मिला जिसमें उन्हें कोविड सम्बंधित एक प्रश्नावली भरने को कहा गया। कोविड से जुड़े मामलों पर अभी तक कोई अन्य विभाग उनके पास नहीं पहुंचा है।

सर्वेक्षण में शामिल 50% उत्तरदाताओं ने इस बात को साझा किया है कि लॉकडाउन की घोषणा के बाद से उन्होंने अपने कार्यालय परिसर / कार्यस्थलों को बंद कर दिया है। इस बिंदु पर बंद करने के बारे में बाकी लोग अस्पष्ट थे लेकिन व्यापार से जुड़े उत्पादन पूरी तरह से रुक गए । कुछ ने उल्लेख किया कि मार्च के पहले सप्ताह में आधिकारिक तौर पर तालाबंदी की घोषणा से पहले कई कारीगरों ने होली के लिए रवाना होने के बाद से पूरे मार्च में व्यवसाय बंद कर दिया था केवल कुछ कारीगर ही उसके बाद वापस आ गए। चंडीगढ़ के एक प्रोपराइटर ने यह भी उल्लेख किया कि सरकार ने तालाबंदी की घोषणा करने में जो सप्ताह लिया, वह बेहतर नियोजित हो सकता था, आधिकारिक तौर पर पूर्व सूचना दी जा सकती थी, जिससे कारीगरों को घर से काम करने के आदेश दिए जा सकते थे।

75% उत्तरदाताओं ने उल्लेख किया कि उनके ऑर्डर्स को या तो रद्द कर दिया गया था या उनके ग्राहकों / दुकानों द्वारा रोक दिया गया था। मुरादाबाद के एक प्रोपराइटर ने उल्लेख किया कि तालाबंदी की घोषणा होते ही INR 7 लाख के एक बड़े ऑर्डर को होल्ड पर रख दिया गया।

49% उत्तरदाताओं ने इस बात को साझा किया है कि कारीगरों के भुगतान लंबित हैं। कुछ कंपनियों ने साझा किया है कि लॉकडाउन के कारण, उस महीने के लिए कर्मचारियों के वेतन भुगतान का, भुगतान नहीं किया गया है। 2 प्रोप्राइटरों ने समय पर भुगतान नहीं करने वाले खरीदारों द्वारा मिलने वाली अजीब चुनौती को साझा किया है, जिससे अवैतनिक विक्रेता / कारीगर सामना कर रहे हैं , यह एक दुष्चक्र है जिसको तेजी से तोडना मुश्किल है।

38% उत्तरदाताओं के घरेलू (इंडिया पोस्ट के माध्यम से) और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही शिपमेंट में देरी हो रही है। चिंता यह है कि अगर उत्पाद समय पर नहीं पहुंचते हैं तो खरीदार ऑर्डर (विशेषकर घरेलू वाले) रद्द कर देंगे।

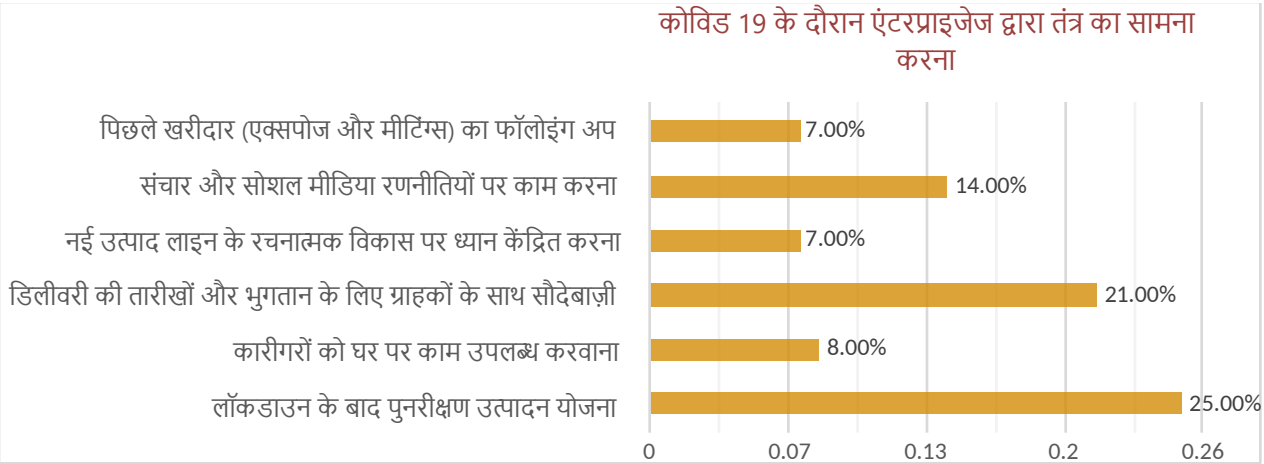

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

25% उत्तरदाताओं ने इन हलकी परिस्थितियों में उत्पादन योजना को फिर से जारी करने की आवश्यकता पर विचार किया। मुंबई स्थित एक डिज़ाइनर प्रोप्रिएटोरशिप ने कहा कि वह 'रिबूट' की प्रक्रिया का इंतज़ार कर रहे थे। इसके साथ ही अपेक्षाकृत बड़ी कंपनियां, अधिक सुरक्षित वित्तीय आधार के साथ, लॉकडाउन चरण के दौरान, बैकअप योजनाएं विकसित कर रही हैं; हालाँकि, छोटे संगठन अभी भी महामारी की तत्कालिक वास्तविकता से जूझ रहे हैं।

खरीदारों और ग्राहकों के साथ बातचीत और उनके फॉलो अप्स 21% उत्तरदाताओं के उचित समय और संसाधनों को नियंत्रित कर रहे हैं। चंडीगढ़ में एक कंपनी की एक विशिष्ट प्रतिक्रिया है जो कहती है कि बहुत सारे खरीदार अभी भी समय पर ऑर्डर पूरा करने पर जोर दे रहे हैं। वे कारीगर वर्तमान ऑर्डर्स को पूरा करने के लिए आवश्यक कच्चे माल के साथ, घर से काम कर रहे हैं। एक कंपनी पुराने खरीददारों और ग्राहकों के साथ प्रदर्शनियों और एक्सपो के लिए पहले से बातचीत कर रही है, ताकि लॉकडाउन के बाद अधिक लीड उत्पन्न कर सके।

कोहिमा, नागालैंड से बाहर एक महिला द्वारा नेतृत्व किये जाने वाली उद्यम ने इस बात को साझा किया है कि वे इस समय नए उत्पाद विकास करके अपने कार्यबल को अधिकार में ले रहे हैं; इसमें वे अपनी महिला कारीगरों को उनके प्रयासों के लिए भुगतान भी कर रहे हैं। 14% उत्तरदाता इस समय का उपयोग अपनी ऑनलाइन उपस्थिति पर ध्यान देने के लिए कर रहे हैं; जैसे अपनी सोशल मीडिया रणनीति को पुन: जांचना, अपनी वेबसाइटों को अपग्रेड करना, उत्पादों की तस्वीरें अपलोड करना और बढ़ते इनवेंटरी के निपटारे के उपाय के रूप में ऑनलाइन बिक्री की योजना बनाना।

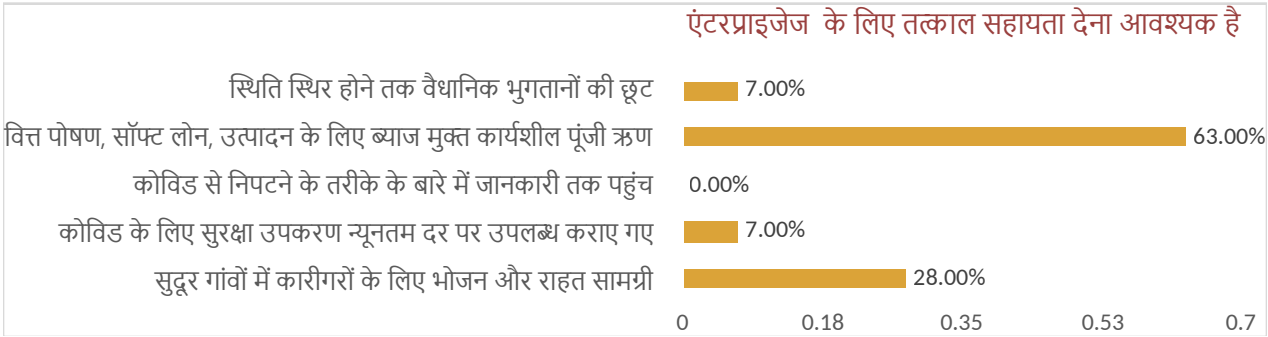

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

63% उत्तरदाताओं ने इस बात को साझा किया है कि लॉकडाउन के दौरान नकदी प्रवाह की चुनौतियों का सामना करने के लिए धन और ऋण की तत्काल आवश्यकता है।उत्तर पूर्व में स्थित एक एंटरप्राइज के अनुसार "अगर हम कुछ बैंकिंग संस्थान के माध्यम से वित्त पोषित हो सकते हैं, तो समाधान संभव हो सकता है। इसलिए, जब तक बाजार फिर से शुरू होगा, तब तक हमारे

पास बाजार के हिसाब से उत्पाद तैयार होंगे और उसके अनुसार बकाया का भुगतान भी किया जा सकेगा। '' इन उत्तरदाताओं के बीच, अधिकांश ने कहा है कि उन्हें अपने व्यापार श्रृंखला में अपने कर्मचारियों, कारीगरों और अन्य आपूर्तिकर्ताओं / सहायक श्रमिकों को भुगतान करने के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता होगी। पालघर, महाराष्ट्र स्थित एक एंटरप्राइज में 75 आदिवासी कर्मचारियों को सहायता देने के लिए वित्तीय सहायता के लिए अनुरोध किया गया है। इसके अलावा, वैधानिक भुगतानों की छूट भी मांगी गयी है ताकि कर्मचारियों और कारीगरों को वेतन और तनख्वाह को बिना किसी बाधा के दिया जा सके।

28% उत्तरदाताओं ने अपने संबंधित गांवों में अपने कारीगरों के लिए राहत सामग्री की कमी पर चिंता व्यक्त की है। देहरादून से, एक प्रोपराइटर कहता है: "इस प्रकोप को रोकने के लिए हम कितनी अच्छी तरह तैयार हैं, किसी भी चिकित्सा सहायता के मामले में निकटतम चिकित्सा सुविधाएं क्या हैं इसकी स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने है , - जैसे उनके फोन नंबर; जिनमे से ज्यादातर नंबर सेवा से बाहर हैं ... "पूर्वी दिल्ली में कारीगरों के साथ काम करने वाली नई दिल्ली की एक कंपनी ने कहा है:" हम निश्चित रूप से दूरदराज के गांवों में अपने कारीगरों के लिए तत्काल खाद्य आपूर्ति और वित्तीय संसाधन चाहते हैं। और इस संकट को दूर करने के लिए सरकारी निकायों से समर्थन प्राप्त करेंगे। " जयपुर में, एक अग्रणी प्रोप्रिएटोरशिप आधारित संगठन का नेतृत्व करने वाले एक डिजाइनर ने इस बात को साझा किया है कि आदर्श रूप से इस समय में दूरदराज के स्थान वाले गांवों में कारीगरों के घरों के दरवाजो तक राहत सामग्री पहुंचनी चाहिए। हरियाणा में, एक कंपनी लीड कहती है: "पिछले महीने के दौरान, हमने बाजारों में हाथ सेनिटाइज़र, फेस मास्क और कीटाणुनाशक एजेंटों जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की कमी का अनुभव किया है; इन चीजों की कीमतें भी सामान्य से दस गुना अधिक हो जाती हैं। ये चीजें हमें मुफ्त में या न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

यह देखना दिलचस्प है कि कोई भी उत्तरदाता कोविड की तत्काल जानकारी लेना आवश्यक नहीं मानता है। एक इंटरप्राइजेज होने के नाते, यह धारणा होती है कि वे अपने साथ कार्यरत कारीगरों से अलग, नवीनतम जानकारी के साथ अच्छी तरह से जुड़े और अपडेट होंगे । इस बात पर कोई महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं थी कि वे इस जानकारी को अपने यहाँ कार्यरत कारीगरों तक पहुंचा रहे हैं या नहीं पहुंचा रहे हैं और उनके द्वारा बनाई जाने वाली बड़ी योजना में क्या इसे प्राथमिकता दी गयी है।

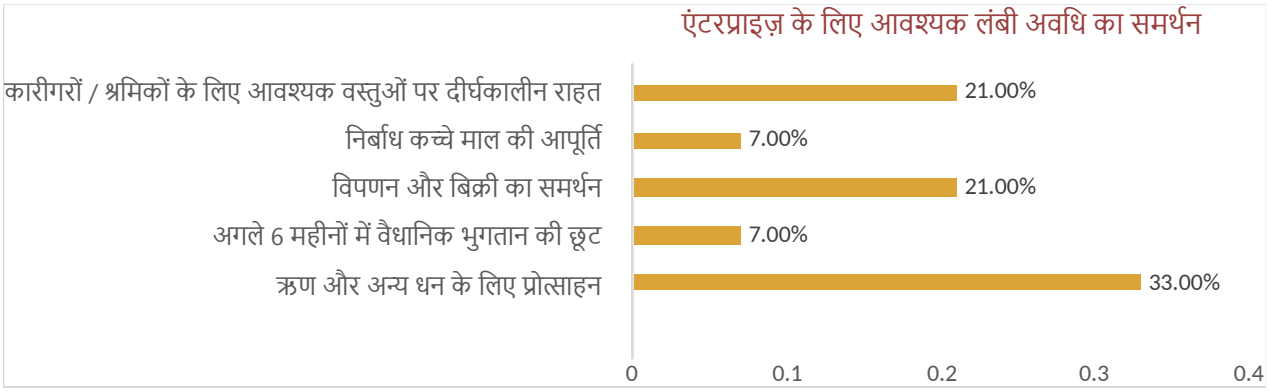

जाँच - परिणाम और अवलोकन:

33% उत्तरदाताओं ने कहा है कि अगले कुछ महीनों में ऋण और अन्य वित्तपोषण के लिए प्रेरित करने और मांग उत्पन्न करने के लिए लंबी अवधि की आवश्यकता है। शिल्प आधारित संगठनों के लिए सरकार से एक प्रोत्साहन की उम्मीद की जाती है, जिसमें उत्पादन पर सहायता के लिए जीएसटी में कटौती, सॉफ्ट ऋण और ब्याज मुक्त कार्यशील पूंजी ऋण जैसे उपाय शामिल हैं, जिससे बिक्री में बी 2 बी से बी 2 सी में स्थानांतरण के लिए उपायों को सक्षम करना, कच्चे माल की आपूर्ति में आसानी हो सके ।
21% उत्तरदाताओं के द्वारा मार्केटिंग और सेल्स में मदद की आवश्यकता को रखा गया है; विशेष रूप से हस्तनिर्मित क्षेत्र में निर्यात में मदद करने के लिए नाममात्र लागत पर निर्यात खरीदारों तक पहुंचने के लिए खुले चैनल को ईपीसीएच द्वारा मदद दी जा रही है ।

सरकार से पूछे जाने वाले प्रमुख प्रश्न

(सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं से)

क्षेत्र	प्रत्येक कारीगर	क्राफ्ट इंटरप्राइजेज /ऑर्गनाइजेशन
स्वास्थ्य	- स्वास्थ्य बीमा योजना पहुंच और लिंकेज - ग्रामीण आकर्षण के केंद्रों में कोविड के लिए जागरूकता निर्माण, टेस्टिंग और फॉलो अप चिकित्सा सुविधा - कोविड टेस्टिंग और ट्रीटमेंट के लिए छूट	- कारीगरों की आसान पहुंच के लिए गांवों में ही शिविरों को लगाना और चेकअप करना
आवश्यक आइटम	- किराने का सामान, अगले 3-4 महीनों में मुफ्त / रियायती दरों पर राशन प्रदान करना - अगले महीने सब्जियों और फलों की कीमतों को स्थिर करने के लिए सरकारी नियंत्रण लागु करना - विशेष रूप से कमजोर वर्गों के लिए आवश्यक वस्तुओं की होम डिलीवरी की व्यवस्था करना -अगले 3-4 महीनों के लिए प्रत्येक कारीगरों को बिजली, गैस, पानी और किराए और हर महीने होने वाले व्यय में राहत	
आजीविका	- राज्य सरकारें कारीगरों के समूहों से हस्तनिर्मित उत्पादों की खरीद के लिए प्रतिबद्ध हैं (इसे शुरू करने के लिए, संभावित समूहों की पहचान करें जो कोविड संकट के दौरान आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं) - हथकरघा बुनकरों और कारीगरों के वेतन के नुकसान की भरपाई के लिए सहायता अनुदान या एक विशेष निधि की अनुमति दें - पहचान की गई / रणनीतिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समारोह / प्रदर्शनियों में वास्तविक हथकरघा / हस्तनिर्मित उत्पादकों / कारीगरों के लिए भागीदारी प्रायोजित करें	कारीगर समूहों के एनवायर्नमेंटल अपग्रेडिंग के लिए सरकार द्वारा दिया गया फंड - प्रत्यक्ष बैंक हस्तांतरण के माध्यम से कारीगरों को INR 15,000 का एकमुश्त भुगतान - विशेषकर इन समयों में, विशेष रूप से शिल्प क्षेत्र में सहायता हेतु भारत सरकार द्वारा अधिक सक्षम वातावरण बनाने के लिए सीएसआई के नियमों को देखा जा रहा है - छोटे और बढ़ते व्यवसायों के लिए लॉकडाउन के तुरंत बाद कामकाज फिर से शुरू करने की अनुमति के लिए विशेष रियायतें (व्यवसाय निरंतरता उपाय) - व्यापार श्रृंखला में कारीगरों / आपूर्तिकर्ताओं / सहायक श्रमिकों के लिए 6 महीने के लिए न्यूनतम मजदूरी की मदद - कच्चे माल की आपूर्ति श्रृंखला के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश -ऑर्डर्स (निर्यात)के सुरक्षित डिस्पैच को सक्षम करने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश
राजकोषीय उपाय	- उत्पादन को फिर से शुरू करने के लिए प्रत्येक कारीगरों के लिए दीर्घकालिक और रियायती ऋण - 1 साल के लिए टैक्स में छूट - कच्चे माल की विभिन्न श्रेणियों पर करों के लिए जीएसटी राहत	- उत्पादन में सहायता के लिए इंटरप्राइजेज के लिए ब्याज मुक्त कार्यशील पूंजी ऋण - जब तक हालात स्थिर नहीं हो जाते, बुनकरों को व्यवसायों में सभी वैधानिक भुगतानों की छूट - गैर-सरकारी संगठनों के लिए 80 जी और 12 ए के नवीकरण में फ्लेक्सिबिलिटी, विशेषकर उन लोगों के लिए जिन्होंने पिछले 2 वर्षों में अपना पंजीकरण नवीनीकृत / प्राप्त किया है - अगले 3-4 महीनों के लिए ऋण रीपेमेंट के संदर्भ में छूट - कपड़ा उद्योग के लिए सभी सामग्रियों पर आयात-निर्यात ड्यूटीज के भुगतान में छूट - भारत सरकार 100 से कम श्रमिकों को रोजगार देने वाले सभी प्रतिष्ठानों का 24% ईपीएफ योगदान दे रही है; इसे कपड़ा उद्योग में भी लागू किया जाना चाहिए - उन उद्यमियों के लिए कम से कम 2 साल के लिए टैक्स ब्रेक दिया जाना चाइये जो अपने स्वयं के व्यवसायों को सेल्फ-फाइनेंसिंग कर रहे हैं
संस्थान की इमारत		- हथकरघा / हस्तशिल्प क्षेत्र में कारीगरों, उद्यमियों और कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधित्व के साथ पोस्ट कोविड के लिए एक कार्य योजना तैयार करने के लिए एक मुख्य समिति (कपड़ा मंत्रालय के सचिव की अध्यक्षता में) का गठन

सिफारिशें - एआईएसीए

ए. राजकोषीय उपाय:

- भारत सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि अप्रैल से सितंबर -20 की अवधि के बीच कोविड -19 के बाद कोई नौकरी ख़तम नहीं होगी है, इंटरप्राइजेज द्वारा भुगतान किए गए वेतन बिलों और अनुबंध वेतन बिलों का 50% प्रदान करना चाहिए।
- पीएसयू बैंक के माध्यम से कोलैटरल के बिना स्टार्ट अप शुरू करने के लिए कम ब्याज दरों के साथ कार्यशील पूंजी ऋण के रूप में बैंक पिछले वर्ष के राजस्व या पिछले दो साल के पेरोल के लिए 50% ऋण की पेशकश करें।
- आयकर और जीएसटी रिफंड द्वारा सुरक्षित ब्याज मुक्त ऋण का लाभ उठाने के लिए क्राफ्ट इंटरप्राइजेज को अनुमति दें।
- कोविड ऋण, मुद्रा ऋण सभी को 3-4 दिनों की एक विशिष्ट समय अवधि में स्वीकृत और वितरित किया जाना चाहिए : इसके लिए शाखा स्तर पर प्रक्रियाओं और संचार को तैयार किया जाना चाहिए।
- क्राफ्ट इंटरप्राइजेज को उनके व्यवसायों पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव डाले 12 महीने बिना ब्याज भुगतान के और सॉफ्ट-लोन द्वारा उन्हें भुगतान करने में मदद करने की अनुमति दें।

बी. मूलराशि तक पहुंच:

- सभी वीसी फंड या योग्य क्राफ्ट-आधारित एंटरप्राइजेज के लिए सिडबी फंड ऑफ फंड्स से धन जारी करना, जिनके पास पूंजीगत कॉल लंबित हैं, बशर्ते कि धन प्राप्त होने के 30 दिनों के भीतर एंटरप्राइज में निवेश किया जाता है। कार्यशील पूंजी को क्राफ्ट एंटरप्राइजेज तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए वेंचर डेट फंड्स में वृद्धि करना चाहिए।
- सूक्ष्म और लघु एंटरप्राइजेज (सिजीटीएमएसई) योजना के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट को युद्धस्तर पर शिल्प एंटरप्राइजेज के लिए बढ़ाया जाना चाहिए। इससे उन्हें नकदी प्रवाह का प्रबंधन करने में मदद मिलेगी और सभी वीसी फंडिंग कम से कम अगले 3 तिमाहियों के लिए पूरे होने की उम्मीद की जाती है।
- क्राफ्ट-आधारित आजीविका / एंटरप्राइज को धन के लिए एक विशेष विषयगत क्षेत्र के रूप में शामिल करने के लिए सीएसआर फंडिंग गाइडलाइन्स की समीक्षा करना चाहिए ।
- प्रधान मंत्री राहत कोष या प्रधान मंत्री कोष से संभावित संसाधन आवंटन के साथ प्रत्येक कारीगरों / शिल्पकारों के लिए मजदूरी के नुकसान की भरपाई के लिए एक कोष बनाएँ।
- संसाधनों को जुटाने के लिए एक्जिम बैंक, ईपीसीएच, शिल्प नेटवर्क जैसी एजेंसियों के साथ साझेदारी करना और उन्हें सबसे अधिक हाशिये पर स्थित क्राफ्ट क्लस्टर्स की ओर निर्देशित करना चाहिए।

सी. मार्केटिंग और सेल्स:

- आने वाले वित्तीय वर्ष में कारीगरों के समूहों / समूहों से हस्तनिर्मित उत्पादों की सरकारी खरीद के लिए प्रतिबद्धताओं को सुनिश्चित करने के लिए तंत्र बनाना । उसमेंMSME, NSIC और कपड़ा मंत्रालय की देखरेख में कोविड (मास्क, सुरक्षात्मक उपकरण, बेड लिनन आदि) के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिए संभावित कारीगरों क्लस्टर्स को उत्पादन के लिए रीस्किलिंग और रीअलाइनिंग करना चाहिए।
- भारत में दर्शनीय हस्तनिर्मित / दस्तकारी उत्पादों के लिए भारत सरकार से संचार और आउटरीच में रणनीतिक निवेश; उपभोक्ताओं को अधिक प्रामाणिकता देने के लिए निकायों को प्रमाणित करने के लिए सहयोग किया जाना चाहिए।
- एनएसआईसी के माध्यम से विशेष रूप से उन कारीगरों / समूहों के लिए जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े हैं उनको मार्केटिंग में सहयोग देने और सहायता प्रदान करने के लिए तंत्र बनाना चाहिए।
- व्यापार की निरंतरता को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने के लिए ईपीसीएच के साथ मिलकर स्पष्ट निर्यात दिशानिर्देशों का मसौदा तैयार करना चाहिए।
- आने वाले वित्तीय वर्ष में वास्तविक रूप से क्यूरेट की जा सकने वाली घरेलू प्रदर्शनियों की सूची तैयार करने के लिए क्राफ्ट नेटवर्क और आयोजकों के साथ काम करना; इसी प्रकार से भारत सरकार से भी अंडरसर्व्ड आर्टिस्ट समुदायों को प्रतिनिधित्व के लिए प्रेरित करना और उनके लिए धन जुटाना चाहिए।

संपर्क करें:

पता: No. B-223, तहखाने, C.R.Park, चित्तरंजन, SDMC स्कूल के सामने, नई दिल्ली, दिल्ली 110019
ईमेल: contact@aiacaonline.org
वेबसाइट: www.aiacaonline.org